# वेदों में धातु

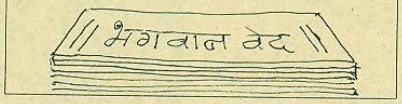


वेदों में अनेक जगह धातुओंका उल्लेख हुआ है, किन्तु हमारे अभाग्य वश उसका मर्म बताने वाले विव्दान नही मिल पाते हैं। भारत में संस्कृत भाषा को बनाये रखने के लिये सरकार को शिक्षा नीति मे इसका स्थान रखने के लिये अनुरोध करने वाले तो अनेकों व्यक्ति हैं, किन्तु इसमें क्या गुण विशेष हैं, इसको प्रमाण सहित सरकारीतंत्र के समक्ष रखनेवाला एक भी व्यक्ति नहीं है। भाषा विज्ञान में सर्वोपरि संस्कृत भाषा में ही वेद मंत्र है। प्रत्येक वेद मंत्र ऋषि , देवता छन्द, स्वरव्दारा चिन्हांकित होते हैं। ऋषि व्दारा विद्या के सिध्दांतो का पता लगता है। देवता व्दारा विद्या के विषय का पता लगता है। छन्द व्दारा विद्या के भाग का पता लगता है। स्वर के व्दारा व्यंजन ओंकार अक्षरोंकी पहचान होती है, तथा इसी के व्दारा व्यंजन अक्षरों में ओंकार अक्षर छुपे रहते हैं। प्रत्येक अक्षर का उदात्त और अनुदात्त, स्वरित स्वरुप व्दारा परस्मेपद, आत्मनेपद, उभयपदोंकी पहचान होकर वेद मंत्रोंमें प्रश्न, उत्तर, प्रार्थना, उपासना, आज्ञादि व्दारा त्रयी वार्ता रूप में बदल जाते हैं।चारों वेद इसी वार्ता व्दारा त्रयी विद्या के रुप में परिवर्तित हो जाते हैं। सातों विभक्तियों के व्दारा उसी वेद मंत्र व्दारा उसके सभी विद्याओंके चरण निकल आते हैं। इसके व्दारा ही हमारे यहाँ के अनेक वैदिक सिध्दान्तों व्दारा वेद मंत्रों के मूल अक्षरों का आगम विलय और लोप व्दारा इन विद्या विशेषों का विस्तार करते चले जाते हैं।हलंत व्दारा ४२ प्रत्योहों के अक्षरों का मंत्रों के अक्षरों के साथ मेल होकर उस विद्याका विस्तारकरते हैं। प्राण तथा महाप्राण अक्षरों का भी कोई वैदिक विधान हैं। वैखरी(मुह) मध्यमा(कंठ) पश्यती (हृदय) परा( नाभि) स्थान के अक्षरों व्दारा चार तरह के शब्दों का वेद मंत्रों के अक्षरोंसे निर्माण होकर वेद विद्याओं का विस्तार करते चले जाते हैं। इसी तरह के अनेक सिध्दांतउपनिषद और स्वयं वेदों में भी हैं जिनके व्दारा वेद विद्याओं का अपने देवता(विषय) के अनुसार ही विस्तार करते चले जाते हैं। जो मंत्र २वेद ३ वेद याचारों वेदों में हैं उनके लिये उनके अक्षर विशेषों का किन्ही वैदिक प्रणालियों व्दारा मिथुनभाव करके विद्या विशेष को दुसरा स्वरुप प्रदान करते हैं। व्यंजन मे जो अक्षर २ वर्ण में हैं उसी क्रम से दूसरे वर्गके अक्षर लगाने से भी इन विद्या विशेषों का विस्तार होता है। हमारे वैदिक ग्रन्थों में वेद मंत्रों को अक्षरों व्दारा भिन्न- भिन्न प्रणलियों के व्दारा बनाये हुये शब्दों के अर्थ किये हुए हैं।

विव्दानों को केवल उन्हें सजाना भर है। अपनी तरफसे किसी भी अक्षर या शब्द का अर्थ नहीं लगाना है। निघन्टू में गतियों के ही एक सौ बाईस नाम दिये हुए हैं। १०१ तरह के उदक (नल) के नाम दिये हुएहैं। इन सब विद्याओं के चरणों को देखते हुए विव्दान लोग हमारे देश की वेद विद्याओं को प्रत्यक्ष न कर पाये तो हम किसका दोष दे सकते हैं।भारत के विव्दान गुरुकुलों मे पढ़कर डिग्रियों को प्राप्त कर लेते हैं किन्तु अभाग्यवश देश के विव्दानों को साधन उपलब्ध करने में उनकी निर्धनता अत्यंत बाधक रहती हैं। क्योंकि वैदिक पुस्तकें काफी मूल्यवान होती हैं और प्रत्येक जगह उपलब्ध नही हो पाती हैं।साथही विव्दानों को जीविका के लिए दूसरे कार्यो में लग जाने के कारण इसका बार-बार अध्ययन नहीं कर पाते हैं।जबकि विदेशी विव्दानों की एक पुस्तक "वैदिक इन्डेक्स" मे कडोनल और कीथने आठ-दसवर्ष के परिश्रम के उपरान्त सन् १९१२ इ. मे प्रकाशित की। इसमें आये हुए हमारे वैदिक शब्दों की बडी ही विशद व्याख्या की गयी है। संस्कृत हमारी मातृभाषा है। इसका एक एक शब्द किसी न किसी रुप मे देशकी प्रत्येक भाषा में समाया हुआ है। विदेशियों के लिए यह कितनी कठिन होगी। इसकी हम कल्पना भी नहीं कर सकते हैं। इस पुस्तक में १९१२ ई. से पूर्व के सैकड़ो विदेशी विद्वानो के नाम का उल्लेख है। जिन्होने हमारे यहां के अनेकानेक वैदिक ग्रन्थों का अध्ययन करके विभिन्न वेदिक प्रणालियों व्दारा इसके जो अर्थ हैं उनका उन्होने वहां के विव्दानों के समक्ष बिना किसी दुराग्रह के निष्काम भाव से प्रस्तुत किया है।

इस पुस्तक को देखने से प्रतीत होता है कि हमारे यहाँ के वैदिक ग्रन्थों का अध्ययन करने में कितने विदेशी विव्दानों ने जीवन समर्पित कर दिया।क्या इतने व्यक्ति सिर्फ हमारी गल्तियों को ढूँढने में लगे थे यह कदापि सम्भव प्रतीत नही होता है। क्या यह दुर्भाग्य का विषय नही है कि आज तक देश में कोई वेदिक शब्द कोष तक भारतीय विव्दान नही बना पाये। जबकि विदेशी विव्दानों व्दारा कई शब्द कोष बनाये गये हैं।आज हमारे देश में वैदिक शब्द कोष बनाने के लिये सभी साधन उपलब्ध हैं।जैसे- विश्वेश्वरानन्द वैदिक शोध संस्थान को शियारपुर(पंजाब) की "चतुर्वेद व्याकरण पदसूचि" और वैदिक इन्डेक्स के व्दारा देश के पाँच -सात विव्दानएक-एक स्वर और व्यंजन वर्ग शब्दों का अर्थ करें तो मै समझता हूँ कि सिर्फ चार छः महिने में ही भारतीय संस्कृत शब्द कोष वेदिक प्रणाली व्दारा विव्दानोंके समक्ष आ सकता है। वैदिक इन्डेक्स को देखने से तथा भारतीय विव्दानों व्दारा वेद मंत्रों की व्याख्या को देखते हुए यही लगता है की भारतीय विव्दान वैदिक ग्रन्थों के विषय में विदेशी विव्दानों के मुकाबले कोईविशेष ज्ञान नहीं रखते हैं। वैदिक इन्डेक्स में(अभि) के सिमर और हिलेब्रान्ट ने सोमरस में तैयार होने से पूर्व उस दूध को बतलाया है कि जो सोमरस में मिश्रित किया जाता है। व्हिटने ने इसे एक ऐसे यन्त्रकी संज्ञा दी है जो पानी को चारों तरफ से दबाकर शिल्प क्रिया में प्रयोग किया जाता है।चतुर्वेद वैयाकरण पद सूची के व्दारा हमारे देश के विव्दान इसके सही अर्थ को ग्रहण कर सकते हैं।"रथ" नाम से वायु यान और जल यानों आदि बनो का वेदोंके अंदर हजारों जगह उल्लेख हैं। इन वाहनों को बनाने में प्रयुक्त होनेवाली धातु( अयस् लोहा श्याम हिरण्य, लोहित, तांबा रजस आदि अनेक धातुओं का भी उल्लेख मिलता है। विव्दानों से प्रार्थना हैकि वह अपने पूर्वाग्रह और हठाग्रह को छोडकर निष्काम भाव से एक बार पुनः वैदिक प्रणालियोंका अध्ययन करके वेदों के मंत्रों की विद्याओं की विवेचना करके आर्य समाज के नियम वेद सब सत्य विद्याओं की विवेचना करके आर्य समाज के नियम वेद सब सत्य विद्याओं को सत्य प्रमाणित करें। साथ ही इस बात को प्रमाण सहित प्रस्तुत करें कि वेद की इतनी जटिलताओं को बनाना मनुष्य के लिए सम्भव न होने से यह ईश्वरकृत ही प्रमाणित होते हैं।

**श्री. छैलबिहारीलाल गोयल**
**हाथरस**

□□□